Magisterprüfung im Nebenfach am 3.7.2007

Sprachen und Kulturen des Neuzeitlichen Südasiens

Klausur: 180 Minuten

1. Übersetzen Sie bitte den folgenden Hindi-Text (entnommen dem Aufsatz *Rāj'naitik nāṭak* von Sarveśvar'dayāl Saksenā; der Aufsatz erschien auf S. 194-196 seines Werkes *Car'ce aur Car'khe*, Nayī Dillī/Paṭ'nā: Rāj'kamal Prakāśan 1986).

आज व्यवस्था-विरोधी लेखन एक फैशन होता जा रहा है—कविता और
कहानी की तरह नाटक में भी। ऐसे लेखन में संसद, सरकार, नौकरशाही, सेठ-
साहूकार, भ्रष्टाचार सभी पर फ़िकरेबाजी होती है। यह तो पता चलता है कि
लेखन इनका विरोधी है लेकिन इनका चरित्र और वे मूल कारण जो इन्हें मौजूदा
कुरूपता प्रदान कर रहे हैं, वे स्पष्ट नहीं होते। अत: लेखन बिना बुनियादी बातों
को समझे और उन्हें प्रेषित किये ही एक विद्रोही तेवर दिखाता है और शहीदाना
मुद्रा में खड़ा हो जाता है। इसका कोई मतलब नहीं होता।

नाटक में तो और भी नहीं जहाँ पूरी बनावट का मतलब ही उस बुनियाद को
दिखाना होता है जो कि जोकुछ घट रहा है, उसकी जिम्मेदार है।

हिन्दी के तथाकथित तमाम राजनैतिक नाटक वास्तव में राजनैतिक नाटक
नहीं हैं। वे या तो नारेबाजी से या फ़िकरेबाजी से भरे होते हैं। इसी अर्थ में वे सही
व्यवस्था-विरोधी नाटक भी नहीं हैं। व्यवस्था-विरोध गालियाँ देना नहीं है। यों
भी सही सार्थक विरोध गालियाँ देना नहीं होता। क्योंकि गालियाँ देने से गालियाँ
खानेवाला जीवित रहता है, उसका अहित नहीं होता। अक्सर व्यवस्था चाहती
भी है कि उसे गालियाँ देनेवाले लोग बने रहें और वह यह कह सके कि उसने
गालियाँ देनेवालों को स्वाधीनता दे रखी है—विरोधियों का वह सम्मान करती
है। लेकिन वस्तुत: यह नपुंसक विरोधियों का सम्मान होता है। लेकिन सही राज-
नैतिक नाटक ऐसा सतही विरोध नहीं करता। वह गलत व्यवस्था—शोषक या
अन्यायी व्यवस्था के अस्तित्व के लिए चुनौती बनता है क्योंकि वह उन चालों को
बेनकाब करता है, जिनपर वे अपना साम्राज्य खड़ा करते हैं।

इस तरह व्यापक अर्थों में वह व्यवस्था-विरोध से नहीं मानवीय नियति से
जुड़ता है और देशकाल से ऊपर भी उठ जाता है। अत: सही राजनैतिक नाटक
सामाजिक-राजनैतिक तन्त्र को उसके आर्थिक ताने-बाने के साथ वर्गचेतना की
भूमि पर परखता हुआ उसे मानवीय नियति से जोड़कर देशकाल से ऊपर उठाता
है। क्योंकि उसका विरोध शोषण और अन्याय से है और इसको बनाये रखनेवाली
ताकतें हर युग में अपना मुखौटा बदलती रहती हैं, सच्चे कवि और नाटककार को
उसे समझना होता है और उससे जूझने के लिए हमेशा तैयार रहना पड़ता है।
हिन्दी के नाटककार के पास अभी यह तैयारी नहीं है। उसे ब्रेख्त से बहुत कुछ
सीखना है और उसे आगे बढ़ाना है।

2. Bitte bestimmen Sie den politischen Standpunkt des Autors auf einer "links-rechts" Skala. Beachten Sie dabei besonders auch Zeilen 13/14 und 17.
3. Was könnte der Autor mit *cunautī* in Zeile 19 meinen?